ISSN 2231-1629
Knowledge Resonance

IMPACT FACTOR 8.072

July – December 2021- Vol. 10 No. 2

महाराष्ट्र में वृध्दाश्रमों में रहने वाले वृध्दों की आयु संबंधी बीमारियों की स्थिती

डॉ. राजेंद्र बगाटे

आयसीएसएसआर, पोस्ट डॉक्टोरल फेलो, समाजशास्त्र विभाग,
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विश्वविद्यालय, औरंगाबाद, एवं
असिस्टेंट प्रोफेसर, मुक्त और दूरस्थ शिक्षा संकाय,
सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे.

प्रस्तावनाः

बुढापा यह मानवी जीवन की अंतिम अटल और सर्वाभौम स्वरूप की घटना है। निरंतर बढती हुई वृद्धोंकी जनसंख्या यह वैश्विक जनसंख्या का लक्षण है। याने जनसंख्या बढ रही है वैसे वृद्धोंकी जनसंख्या भी बढ रही है। घटता हुआ जन्मदर और मृत्यूदर से वृद्धोंका प्रमाण बढ रहा है। इसलिए वृद्धत्व समस्या निर्माण हुई है। वृद्ध वे हैं, जो 60 वर्ष की उम्र पूरी कर चुके हैं और काम कर पाने में उतने सक्रिय नहीं हैं, जितना होना चाहिए। "21 वी शताब्दी का सबसे बडा लक्षण यह है की यह शतक वयोवर्धन का है।"[1] याने इस शतक में वृद्धों की जनसंख्या बडे पैमाने मे बढ गई है।"संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा कीए गए सर्वेक्षण के अनुसार भारत में इ. स. 2025 तक वृद्धों की जनसंख्या 17 कोटी 74 लाख होने का अनुमान है। यह जनसंख्या विश्व के वृद्ध लोगो की तुलना में 15 प्रतिशत होगी। अब विश्व के 60 प्रतिशत वृद्ध विकसनशील राष्ट्रोंमें रहते है।"[2] जनसंख्या संक्रमण से राष्ट्र को जैसा जनसांख्यिकी लाभांश का फायदा होता है, वैसे ही कालांत से नई चुनौतीयो का भी सामना करना पडता है। इन अनेक चुनौतीयो मे से ही जनसंख्या में बढता वृद्धों का प्रमाण एक बडी चुनौती है। "आज विश्व मे कुल 58 करोड वृद्ध लोग रहते है, इन मे से 38 करोड वृद्ध विकसनशील राष्ट्रों के है। इस का अर्थ यह है की आज वृद्धों की जनसंख्या 10 प्रतिशत है। ऐसा अनुमान है, की इ. स. 2020 तक विश्व में 100 करोड वृध्द होंगे, इन मे से 70 करोड विकसनशील राष्ट्रो में होंगे।"[3] याने विकसन" ील राष्ट्रों मे वृद्धों का प्रमाण जादा रहने वाला है। "2011 के जनगणना अनुसार भारत मे 10 करोड वृद्ध (60 वर्ष के उपर) जनसंख्या है, आज के समय देश मे 12 करोड वृद्ध रहते है और आगे के 10 वर्षो मे याने 2030 मे यह जनसंख्या 30 करोड होने का अनुमान है।"[4] 2011 के जनगणना अनुसार भारत के नागरी क्षेत्र मे लगभग 30 प्रतिशत वृद्ध है। आज स्वास्थ्य की दृष्टी से चिकित्सा विज्ञान और आधुनिक उपचार तकनीकि ने अनेक रोगो पर मात की है, इसके परिणामस्वरूप आज मनुष्य का अयुर्मान बढा है, एक तरफ यह अच्छी बात होते हुए भी इसका एक दु:खद पहलू यह है कि बुजुर्गो के लिए सम्मानजनक परिस्थितियां घटी हैं और समाज उन्हें एक तरह का बोझ समझने लगा हैं। चाहे घर हो या बाहर सभी जगहों पर वृद्धों को असुविधा व असहजता झेलनी पड रही है। परिणाम स्वरुप आज वृद्धत्व यह समस्या निर्माण हुई है। कारण वृद्ध काल मे इन वृद्धों की सेवा कौन करेगा? यह बडा प्रश्न आज परिवार के सामने निर्माण हुआ है। इसलिए परिवार मे सतत वाद–विवाद हो रहे है और वृद्धों को बुरे अनुभवों का सामना करना पड रहा है। इसलिए उनको अकेले जीवन बीताना पड रहा है तथा घर–परिवार छोडकर वृद्धाश्रमों मे रहना पड रहा है। "इ. स. 1950 मे भारत में मनुष्य का आयुर्मान 41 वर्ष था, 1990 मे यह 62 तक बढा और 2021 तक 70 वर्षोतक बढेगा। आज विश्व के 20 राष्ट्रो के मनुष्यों का आयुर्मान 72 वर्ष है, आज ही कुछ प्रगत राष्ट्रो मे वृद्धों की जनसंख्या यह कुल जनसंख्या के 20 प्रतिशत बढी है।"[5] इसलिए वृद्धोंकी समस्यांएं गंभीर हो रही है। उनको सुलझाने के लिए ध्यान दिया जाए और वृद्धों का जीवन आनंदमय, चैतन्यमय रहे इसलिए प्रत्येक राष्ट्र ने उन दिशा मे कार्य करने की जरूरत है।

बुढापा (Aging) एक प्राकृतिक प्रक्रिया है, पैदा होने वाला हर व्यक्ति जन्म से बुढापे की ओर बढ़ रहा है। लेकिन "जब विश्व की जनसंख्या में वृद्धो का प्रतिशत बढ रहा था तब शासन ने विशेष रूप से नियोजन बोर्ड और सामाजिक कार्यकर्ताओंने, इस मुद्दे पर विशेष ध्यान दिया। बुढापा (Aging) यह एक मात्र सामाजिक प्रश्न नहीं है, बल्की आज के राज्यकर्ताओं के लिए यह एक बड़ी चुनौती है।"[6] इसलिय आज वृद्धों की तरफ ध्यान देना जरुरी है। ऐसा लगता है कि, "यदि किसी वरिष्ठ व्यक्ति के पास वित्तीय संरक्षण नहीं है या यदि वह समाज में शामिल किया नहीं जाता है, तो ऐसे वरिष्ठ व्यक्ती अकेले ही रहेंगे और उनका जीवन याने एक प्रकार का सामाजिक मृत्यू ही है, और इस समय वरिष्ठ व्यक्ति खुद को परिवार और समाज पर बोझ समजणे लागते है।"[7] आधुनिक भारत में 'वृद्धों' की समस्या एक ज्वलंत समस्या है। "भारतीय समाज के संयुक्त परिवार के क्षरण और अर्थव्यवस्था के परिवर्तन से यह एक नई समस्या पैदा हुई है। इस समस्या की तीव्रता की अनुभूती भारत के साथ साथ चीन जैसे देश को भी हो रही है। 19वीं शताब्दी तक भारत में वृद्धों के बारे में कोई भी प्रश्न नहीं था, लेकिन 21 वीं सदी में, अखबारों, पत्रिकाओं आदि में वृद्धावस्था की समस्याएं उजागर की जा रही हैं। अब वृद्धों की समस्या सिर्फ एक देश की नहीं है, यह एक वैश्विक समस्या है।[8] इसी कारण इस मुद्दे पर ध्यान देने की जरूरत है. बुजुर्गों की समस्या की वैश्विक प्रकृति को ध्यान में रखते हुए, संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1999 को अंतर्राष्ट्रीय वरिष्ठ नागरिकों के वर्ष के रूप में घोषित किया था। क्योकी लोगों को इस समस्या पर ध्यान देना चाहिए और इस संबंध में योजनाबद्ध योजनाओं को लागू करने का उद्देश इस के पिछे था। "भारत में वृद्ध लोगों की समस्या शहर, महानगरों में जादा

दिखाई पडती है। लेकीन ग्रामीण समाज में भी यह समस्या बढ रही है. ग्रामीण समुदाय की तुलना में शहरी समुदाय में अकेले वृद्धो का प्रश्न जटील हुआ है।"[9] इसलिय वृद्धो को कई समस्याओं का सामना करना पड रहा है।

प्राचीन भारतीय समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली अस्तित्व में थी। युवा व्यक्ति को प्रासंगिक सलाह और मार्गदर्शन वृद्ध व्यक्ति को ही करना पडता था। लेकिन आज वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण के कारण, संयुक्त परिवार प्रणाली में भारी बदलाव हुए, आज बदलते वक्त के दौर में संयुक्त परिवारों में टूटन भुरु हो गयी और एकल परिवार व्यवस्था अस्तित्व में आई। एकल परिवार में पति–पत्नी और उनके अविवाहित बच्चों के रहने के कारण वृद्ध लोगोकी उनको कठिनाई लग रही है। इस कारण, वृद्ध लोगों का महत्व कम हो के उनपर वृद्धाश्रमो में रहने का समय आ रहा है।

विकासशील देशों में वृद्धों की आयु संबंधी बीमारियों की स्थिती :

1. ऐसा अनुमान है की 2021 तक विकासशील देशों में तीन– चौथाई मौतें वृद्धावस्था से संबंधित होगी। इनमें भी सबसे आधिक मौतें रक्तवाही तंत्र के रोगों, कैंसरों तथा मधुमेह जैसे असंक्रामक रोगों से होगी।
2. एशिया के कुछ भागों में होने वाली मौतों के दो बड़े कारण रक्तवाही तंत्र के रोग व कैंसर हैं। भारत, इंडोनेशिया और थाईलैंड में कुल वयस्क आबादी का 15 प्रतिशत हिस्सा उच्च रक्तचाप से प्रभावित पाया गया है शहरी आबादी में मधुमेह से प्रभावित लोगों की संख्या औद्योगिकशत देशों के बराबर है।
3. फिलहाल अफ्रीका, एशिया और (लातिन) अमेरिका में वृद्धावस्था में होने वाली विमूढ़ता (डिमेंशिया) से करीब 2 करोड़ 90 लाख लोग प्रभावित हैं। आकलन के अनुसार, 2021 तक इनकी संख्या 5 करोड़ 50 लाख से भी अधिक हो सकती है।
4. उम्र के साथ दृष्टि–दुर्बलता और दृष्टिहीनता तेजी से बढ़ते हैं। इसका एक उल्लेखनीय उदाहरण मोतियाबिंद है। हालाँकि मोतियाबिंद कई कारणों से हो सकता है, लेकिन ज्यादातर मामलों में वह उम्र के बढ़ने की प्रक्रिया से जूडा होता है।
5. वर्तमान में संसार में 4 करोड़ 50 लाख लोग अंधे हैं और 13 करोड़ 50 लाख लोग दृष्टि–दुर्बलता का शिकार हैं। दुनिया भर में मोतियाबिंद के कारण 1 करोड़ 90 लाख लोग दृष्टिहीन हैं। एशिया और अफ्रीका के अधिकांश देशों में 40 प्रतिशत से भी अधिक लोग मोतियाबिंद के कारण दृष्टिहीन है।

भारत में वृद्धों की आयु संबंधी बीमारियों की स्थितीः

1. जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, 1995 में ग्रामीण भारत में वृद्धों की मृत्यु के तीन सबसे बड़े कारण श्वासनली–शोथ/दमा (25.8 प्रतिशत), दिल का दौरा (13.2 प्रतिशत) और लकवा (8.5 प्रतिशत) रहे हैं।
2. भारत के कुछ अस्पतालों में वृद्धों के स्वास्थ्य की देखभाल के लिए वृद्ध चिकित्सालय है।
3. भारत में 10 प्रतिशत से अधिक वृद्ध विषादग्रस्त हैं और इस आयुवर्ग के 40–50 प्रतिशत लोगों को अपने जीवन की संध्या में कभी न कभी मनोचिकित्सीय या मनोवैज्ञानिक हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।

52 वें नेशनल सैम्पल सर्वे (1995– 96) के अनुसार

1. उम्रदराज लोगों में दीर्घकालिक रोगी की मौजूदगी बहुत अधिक पाई गई। ग्रामीण क्षेत्रों (25 प्रतिशत) के मुकाबले शहरी इलाकों (55 प्रतिशत) में इस आयुवर्ग के लोगों को ये रोग अधिक थे।
2. वृद्ध लोगों में सबसे गंभीर रोग था 'जोड़ों की समस्या'। इससे ग्रामीण इलाकों में 38 प्रतिशत और शहरी क्षेत्रों में 43 प्रतिशत उम्रदराज लोग प्रभावित थे। दूसरी अधिक गंभीर और आम बीमारी खाँसी थी।
3. ग्रामीण इलाकों में पुरूषों के मुकाबले महिलाएँ 'जोड़ों के समस्या' से ज्यादा ग्रस्त पाई गई।
4. शहरी इलाकों में पुरूषों के मुकाबले महिलाएँ 'जोड़ों के समस्या' उच्चत्तम रक्तचाप और कैंसर से ज्यादा ग्रस्त पाई गई।
5. ग्रामीण इलाकों में 40 और शहरी इलाकों में 35 प्रतिशत उम्रदराज लोग किसी न किसी प्रकार की शारीरिक अक्षमता (दिखने, सुनने व बोलने इत्यादि से संबंधित) से ग्रस्त पाए गए।

वृद्धावस्था की ओर बढ़ना एक ऐसी शारीरिक प्रक्रिया है जिसे उल्टा नहीं जा सकता, जो व्यक्ति के समूचे जीवन में घटित होती रहती है और बिना रुके मृत्यु तक चलती रहती है।[10]

वृद्धाश्रम किसे कहते है ?

"वृद्धाश्रम ऐसे आवासीय केन्द्र हैं जिसमें 60 वर्ष से अधिक उम्र के कम से कम 25 लोगों के रहने की व्यवस्था की जाती हैं।"[11]

शोध के उद्देश –

१. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रमों में रहने वाले वृद्धों की आयु संबंधी बीमारियों की स्थिती जानना।

२. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रमो में रहने वाले वृद्धों को आयु संबंधी बीमारियों से संबंधित उपलब्ध सुविधाओं का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

१. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रमो में रहने वाले वृद्धों की आयु संबंधी बीमारियों की स्थिती बुरी है।

२. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रमो में रहने वाले वृद्धों को आयु संबंधी बीमारियों से संबंधित सुविधाऐं नही दी जाती है।

शोध विधि–

प्रस्तुत शोध का अध्ययन क्षेत्र भारत देश का महाराष्ट्र राज्य हैं। पूरे महाराष्ट्र राज्य में से कुल 51 वृद्धाश्रमों में रहने वाले कुल 2400 वृद्धों में से 600 याने 25 प्रतिशत वृद्धों को अध्ययन के लिए सोद्देश्य (Purposive) नमूना चयन पद्धति के अनुसार नमुना के रूप में चुना गया है। प्रस्तुत शोध के लीए प्राथमिक तथा द्वितियक स्त्रोतो का उपयोग किया गाय है, प्राथमिक स्त्रोतो में साक्षात्कार सूची का उपयोग किया गया है और यह साक्षात्कार मई 2019 से नवंबर 2019 में लीए गए है।

प्रस्तुत शोध में महाराष्ट्र में वृद्धाश्रमों में रहने वाले वृद्धो की आयु संबंधी बीमारियों की स्थिती कैसी है, यह खोजने का प्रयास किया गया है, यह आगे की जानकारी से अधिक स्पष्ट होगा।

वृद्ध उत्तरदाताओं की व्यक्तिगत जानकारी

सारणी संख्या	शिर्षक	विकल्प	वृद्धों की संख्या	प्रतिशत
1	आयु समुह	60–69 वर्ष	223	37.2
		70–79 वर्ष	233	38.8
		80–89 वर्ष	124	20.7
		90 वर्ष से उपर	20	03.3
2	लिंग	स्त्री	320	53.3
		पुरुष	280	46.7
3	धर्म	हिंदु	512	85.3
		बौद्ध	41	6.8
		जैन	24	4.0
		सिख	9	1.5
		इसाई	9	1.5
		मुस्लिम	5	0.8
4	जति वर्ग	खुलो/अनारक्षित वर्ग	358	59.7
		अनुसूचित जाति	59	9.8
		अनुसूचित जनजाति	7	1.2
		अन्य मागास वर्ग	158	26.3
		विशेष मागास वर्ग	18	3.0
5	शिक्षा	अशिक्षित	169	28.2
		प्राथमिक	180	30.0
		माध्यमिक	131	21.8
		उच्च माध्यमिक	45	7.5
		स्नातक	57	9.5
		स्नातकोत्तर	11	1.8
		प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त	7	1.2
6	वैवाहिक स्थिति	'अविवाहित'	112	18.7
		विवाहित	142	23.7
		'विधवाए'	217	36.2
		विधुर	99	16.5
		तलाक" शुदा	16	2.7
		परित्यक्ता वृद्ध महिलाएं	14	2.3
कुल			**600**	**100.0**

सारणी संख्या 1. के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 60 से 69 वर्ष इस 'जवान वृद्ध' (Young Old) आयु समुह के 37.2 प्रतिशत वृद्ध महाराष्ट्र में वृद्धाश्रामो में रहते है, तथा 70 से 79 वर्ष इस मध्यम वृद्ध (Middle Old) आयु समूह के 38.8 प्रतिशत वृद्ध रहते है, तथा 80 से 89 वर्ष इस वृद्ध–वृद्ध (Old-Old) आयु समूह के 20.7 प्रतिशत वृद्ध रहते है, तथा 90 वर्ष से उपर इस अति वृद्ध (Oldest Old) आयु समूह के 3.3 प्रतिशत वृद्ध रहते हुए दिखाई देते है। इससे हम यह कह सकते हैं कि, विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में हो रहे नए प्रयोग और आधुनिक उपचार तकनिकी के चलते औसत आयु बढती हुई दिखाई दे रही है और आगे भी बढती हि रहेगी यह हमे ऊपर की सारणी से दिखता है।

सारणी संख्या २. के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि महाराष्ट्र में वृद्धाश्रमो में रहने वाले वृद्धो में 53.3 प्रतिशत वृद्ध महिलाएं है, तथा 46.7 प्रतिशत वृद्ध पुरुष दिखाई देते है, याने महाराष्ट्र में वृद्धाश्रमो में रहने वाले वृद्धो में पुरुषो से जादा महिलाओं का प्रमाण है।

सारणी संख्या ३. के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि महाराष्ट्र में वृद्धाश्रमो में रहने वाले वृद्धो में हिंदु धर्म के सर्वाधिक याने 85.3 प्रतिशत वृद्ध है, यह प्रमाण 'बौद्ध' 6. 8 प्रतिशत, जैन 4.0 प्रतिशत, सिख 1.5 प्रतिशत, इसाई 1.5 प्रतिशत और मुस्लीम 0.8 प्रतिशत इन सब धर्मो के उत्तरदाताओं के प्रमाण से सर्वाधिक है, यह प्रमाण सबसे अधिक होने का कारण भारत के महाराष्ट्र राज्य में हिंदु धर्मियों की जनसंख्या सर्वाधिक होणे के कारण महाराष्ट्र

में वृद्धाश्रामो में रहनेवाले वृद्धों में भी सर्वाधिक हिंदु धर्मीय होना स्वाभाविक है।

सारणी संख्या ४. के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि महाराष्ट्र में वृद्धाश्रमोमें रहने वाले वृद्धो में खुले/ अनारक्षित वर्ग के 59.7 प्रतिशत वृद्ध है, यह प्रमाण अनुसूचित जाति 9.8 प्रतिशत, अनुसूचित जनजाति 1.2 प्रतिशत अन्य मागास वर्ग 26.3 प्रतिशत और विशेष मागास वर्ग 3.0 प्रतिशत इन वर्गो से अधिक है।

सारणी संख्या ५. के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि महाराष्ट्र में वृद्धाश्रमोमें रहने वाले वृद्धो में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त 30.0 प्रतिशत वृद्ध है, यह प्रमाण, अशिक्षित 28.2 प्रतिशत, माध्यमिक 21.8 प्रतिशत, उच्च माध्यमिक 7.5 प्रतिशत, स्नातक 9.5 प्रतिशत, स्नातकोत्तर 1.8 प्रतिशत और प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त 1.2 प्रतिशत वृद्धों के प्रमाण से सर्वाधिक है, इससे हम यह कह सकते हैं कि, महाराष्ट्र में जैसे जैसे शिक्षा का स्तर बढता जाता है, वैसे वैसे वृद्धो में शिक्षा का प्रमाण कम दिखाई देता है।

सारणी संख्या ६. के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि महाराष्ट्र में वृद्धाश्रमोमें रहने वाले वृद्धों में 'अविवाहित' वृद्धों का प्रमाण 18.7 प्रतिशत है, तथा विवाहित वृद्धों का प्रमाण 23.7 प्रतिशत है, तथा 52.7 प्रतिशत वृद्ध के साथीदारों का मृत्यू हुआ है, इनमें 36.2 प्रतिशत 'विधवाएं' है, और 16.5 प्रतिशत विधुर है, तथा 2.7 प्रतिशत वृद्धों ने अपने साथीदार से तलाक ली है और 2.3 प्रतिशत परित्यक्ता वृद्ध महिलाएं है। उपरोक्त तालिका से ऐसा दिखता है की, 'विवाहित वृद्ध' 81.3 प्रतिशत है यह प्रमाण 'अविवाहित' 18.7 प्रतिशत वृद्धो से अधिक है, इस से हमे ऐसा दिखता है की, भारतीय समाज में विवाह अनिवार्य माना गया है, इससे हमे विवाह की अनिवार्यता यह भारतीय समाज का लक्षण स्पष्ट होता है।

वृद्ध उत्तरदाताओं की आयु संबंधी बीमारियों की स्थिती

सारणी संख्या	शिर्षक	विकल्प	वृद्धों की संख्या	प्रतिशत
7	वर्तमान स्थिति में स्वास्थ्य की स्थिति	अच्छी है	246	41.0
		बुरी है	354	59.0
8	कौनसी मानसिक बिमारी है.	डिमेन्शिया	28	4.7
		अल्झायमर	4	0.7
		डिमेन्शिया और अल्झायमर	4	0.7
		एक भी नही	564	94.0
9	स्मरणशक्ती / यादाष्त कैसी है।	'बहुत अच्छी है'	69	11.5
		'अच्छी है'	262	43.7
		'मध्यम'	100	16.7
		'कुछ हद तक अच्छी है'	108	18.0
		'कुछ भी याद नहीं रहता'	61	10.2
10	गिर कर कहा फ्रैक्चर हुआ है	हात मे	49	8.2
		पैर मे	82	13.7
		कमर मे	38	6.3
		हात और पैर मे	6	1.0
		पैर और कमर मे	1	0.2
		हात, पैर और कमर मे	1	0.2
		कोई फ्रैक्चर नही हुआ है	423	70.5
11	स्वास्थ्य संबंधी कौन सी समस्याएं हैं..	रोग प्रतिरोधक शक्ती का ऱ्हास	315	52.5
		'मन पर नियंत्रण की कमी'	65	10.8
		कब्ज	12	2.0
		पेशाब से परेशान	19	3.2
		अपचन से परेशान	67	11.2
		रोग प्रतिरोधक शक्ती का ऱ्हास+'मन पर नियंत्रण की कमी'+ कब्ज + पेशाब से परेशान+अपचन से परेशान	3	0.5
		रोग प्रतिरोधक शक्ती का ऱ्हास+पेशाब से परेशान+अपचन से परेशान	5	0.8
		रोग प्रतिरोधक शक्ती का ऱ्हास+'मन पर नियंत्रण की कमी'	64	10.7
		रोग प्रतिरोधक शक्ती का ऱ्हास+कब्ज+अपचन से परेशान	3	0.5

		'मन पर नियंत्रण की कमी'+कब्ज	2	0.3
		रोग प्रतिरोधक शक्ती का ऱ्हास+अपचन से परेशान	4	0.7
		कोई भी समस्या नही है	41	6.8
12	**उत्तरदाताओं को निम्नलिखित में से किससे संबंधित बीमारीयां है।**	आंखो से संबंधित बीमारी	176	29.3
		हड्डी से संबंधित बीमारी	103	17.2
		गले से संबंधित बीमारी	25	4.2
		सीने से संबंधित बीमारी	26	4.3
		पेट से संबंधित बीमारी	22	3.7
		आंखे+हड्डी+गला+सीना+पेट से संबंधित	46	7.7
		आंखे+पेट से संबंधित	5	0.8
		आंखे+हड्डी+गला+पेट से संबंधित	10	1.7
		आंखे+हड्डी से संबंधित	107	17.8
		हड्डी+सीना से संबंधित	7	1.2
		हड्डी+गला से संबंधित	1	0.2
		भेजे से संबंधित बीमारी	4	0.7
		आंखे+सीने से संबंधित	4	0.7
		आंखे+गले से संबंधित	10	1.7
		आंखे+भेजे से संबंधित	1	0.2
		आंखे+हड्डी+पेट से संबंधित	5	0.8
		आंखे+हड्डी+भेजे से संबंधित	1	0.2
		त्वचा से संबंधित	1	0.2
		एक भी नही	46	7.7
13	**अन्य कोई बीमारी**	मधुमेह	45	7.5
		कैंसर	3	0.5
		रक्तचाप	177	29.5
		अर्धागवायू	33	5.5
		मुतखडा	49	8.2
		बवासीर/पाईल्स	41	6.8
		दिल का दौरा	14	2.3
		मधुमेह+मुतखडा+ बवासीर/ पाईल्स	2	0.3
		मधुमेह+रक्तचाप	41	6.8
		मधुमेह+रक्तचाप+दिल का दौरा	8	1.3
		मधुमेह+दिल का दौरा	3	0.5
		मधुमेह+रक्तचाप+अर्धागवायू	10	1.7
		कैंसर+रक्तचाप	4	0.7
		अर्धागवायू+दिल का दौरा	2	0.3
		मधुमेह+मुतखडा	2	0.3
		रक्तचाप+अर्धागवायू+ बवासीर/पाईल्स	1	0.2
		रक्तचाप+मुतखडा	1	0.2
		कोई भी बीमारी नही है	164	27.3
		कुल	**600**	**100.0**

सारणी संख्या ७. के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि वृद्धाश्रमोमें रहने वाले वृद्धो में वर्तमान स्थिति में हमारे स्वास्थ्य की स्थिती बुरी है ऐसा उत्तर देणे वाले 59.0 प्रतिशत वृद्ध है, यह प्रमाण वर्तमान स्थिति में हमारे स्वास्थ्य की स्थिती अच्छी है ऐसा उत्तर देणे वाले 41.0 प्रतिशत वृद्धों के प्रमाण से अधिक है। यह प्रमाण अधिक होणे का कारण याने वृद्धावस्था में व्यक्ती को स्वास्थ्य के बारे में अनेक समस्याओ का सामना करना पडता है, इसलिए हमारे स्वास्थ्य की स्थिती बुरी है,ऐसा उत्तर देणे वाले सबसे जादा वृद्ध है।

सारणी संख्या 8. के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि वृद्धाश्रमो मे रहने वाले वृद्धों में से 4.7 प्रतिशत वृद्धों को

डिमेन्शिया यह मानसिक बिमारी है, तो 0.7 प्रतिशत वृद्धों को अल्झायमर यह मानसिक बिमारी है, तो 0.7 प्रतिशत वृद्धों को डिमेन्शिया और अल्झायमर यह दोनो मानसिक बिमारीयां है, तो 94.0 प्रतिशत वृद्धों ने हमे एक भी मानसिक बिमारी नही है ऐसा जवाब दिया है।

सारणी संख्या 9. के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि वृद्धाश्रमों में रहने वाले वृद्धों में से हमारी स्मरणशक्ती/यादाष्त 'अच्छी है' ऐसा जवाब देने वाले 43.7 प्रतिशत वृद्ध है, यह प्रमाण हमारी स्मरणशक्ती/यादाष्त 'बहुत अच्छी है' 11.5 प्रतिशत, 'मध्यम' 16.7 प्रतिशत, 'कुछ हद तक अच्छी है' 18.0 प्रतिशत और हमें 'कुछ भी याद नहीं रहता' ऐसा जवाब देने वाले 10.2 प्रतिशत वृद्धों के प्रमाण से अधिक है। सारणी संख्या 10, के अवलोकन से यह प्रतीत होता है कि 70.5 प्रतिशत ऐसे उत्तरदाता है, जिनका गिर कर कोई फ्रैक्चर नहीं हुआ है, यह अनुपात हमारा गिर कर कही ना कही फ्रैक्चर हुआ है ऐसा जवाब देणे वाले 29.5 प्रतिशत उत्तरदाताओं से अधिक है, जिन 29. 5 प्रतिशत लोगो का फ्रैक्चर हुआ है, इसमे 13.7 प्रति" ात लोगो ने हमारे पैर मे फ्रैक्चर हुआ है, ऐसा जवाब दिया है, और यह प्रमाण भारीर के अन्य भागो मे फ्रैक्चर हुआ है ऐसा जवाब देणे वाले उत्तरदाताओं से सर्वाधिक है।

सारणी संख्या 11. के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि वृद्धाश्रमों में रहने वाले कुल वृद्धो में से 93.2 प्रतिशत वृद्धों को स्वास्थ्य को लेकर समस्याएं है, तथा 6.8 प्रतिशत वृद्धों को स्वास्थ्य को लेकर कोई भी समस्या नही है, जिन्हे स्वास्थ्य को लेकर समस्यायें है उनमें से 'हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ती का ऱ्हास हो गाया है, ऐसा उत्तर देने वाले 52.5 प्रतिशत वृद्ध है, यह प्रमाण 'मन पर नियंत्रण की कमी' 10.8 प्रतिशत, कब्ज 2.0 प्रतिशत, पेशाब से परेशान 3.2 प्रतिशत, अपचन से परेशान 11.2 प्रतिशत, 'हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ती का ऱ्हास+'मन पर नियंत्रण की कमी'+कब्ज+पेशाब से परेशान+अपचन से परेशान'' ये स्वास्थ्य को लेकर समस्यांऐ है, ऐसा कहने वाले 0.5 प्रतिशत, 'हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ती का ऱ्हास+पेशाब से परेशान+अपचन से परेशान'' ये स्वास्थ्य को लेकर समस्यांऐ है, ऐसा कहने वाले 0.8 प्रतिशत, और 'हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ती का ऱ्हास+'मन पर नियंत्रण की कमी' ये स्वास्थ्य को लेकर समस्यांऐ है, ऐसा कहने वाले 10.7 प्रतिशत, 'हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ती का ऱ्हास+कब्ज+अपचन से परेशान'' ये स्वास्थ्य को लेकर समस्यांऐ है, ऐसा कहने वाले 0.5 प्रतिशत, 'हमारे शरीर की 'मन पर नियंत्रण की कमी'+कब्ज' ये स्वास्थ्य को लेकर समस्यांऐ है, ऐसा कहने वाले 0.3 प्रतिशत, और 'हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक भाक्ती का ऱ्हास+अपचन से परेशान'' ये स्वास्थ्य को लेकर समस्यांऐ है, ऐसा कहने वाले 0.7 प्रतिशत वृद्धों से अधिक है। सारणी संख्या 12. के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि वृद्धाश्रमों में रहने वाले वृद्धों में से 29.3+7.7+0.8+1.7+17.8+0.7+1.7+0.2+0. 8+0.2=60.9 प्रतिशत वृद्धों को आखों से संबंधित बीमारी हुई है, और यह अनुपात हमे अन्य अंगो से संबंधित बीमारीयां है। ऐसा उत्तर देणे वाले उत्तरदाताओं की तुलना में अधिक है। इससे हम यह कह सकते हैं कि वृद्धावस्था में वृद्धों में आखों से संबंधित बिमारीयां अधिक होती हैं। सारणी संख्या 13. के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि वृद्धाश्रमों में रहने वाले वृद्धों में से 72.7 प्रतिशत वृद्धों कों कोई ना कोई बीमारी है, तथा 27.3 प्रतिशत वृद्धो को अन्य कोई भी बीमारी नही है, हमे बीमारीया है, ऐसा जवाब देने वालो 72.7 प्रतिशत वृद्धों में से 29.5+6.8+1. 3+1.7+0.7+0.2+0.2=40.4 प्रतिशत वृद्धों ने हमे रक्तचाप यह बीमारी है, ऐसा बताया है, यह प्रमाण शेष बीमारीयां बताने वाले वृद्धों के प्रमाण से अधिक है।

वृद्धाश्रमो में उत्तरदाताओ को आयु संबंधी बीमारियों से संबंधित उपलब्ध सुविधाऐं

सारणी संख्या	शिर्षक	विकल्प	वृद्धों की संख्या	प्रतिशत
14	सेहत की देखभाल कौन करता है।	साथी	41	6.8
		कर्मचारी	136	22.7
		दोस्त	123	20.5
		लडकी	1	0.2
		कर्मचारी+ दोस्त	34	5.7
		बहन	1	0.2
		भाई	1	0.2
		कोई भी नही	263	43.8
15	वृद्धाश्रमो में आयु संबंधी बीमारियों से संबंधित उपलब्ध सुविधाऐं	अस्पताल	100	16.7
		ॲब्युलन्स	113	18.8
		प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र	4	0.7
		अस्पताल+ ॲब्युलन्स	72	12.0
		अस्पताल+ ॲब्युलन्स+जिम	11	1.8
		कोई भी नही	300	50.0
16	कर्मचारी प्रशिक्षित है क्या?	हां	263	43.8
		नही	337	56.2
		कुल	**600**	**100.0**

सारणी संख्या 14 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि वृद्धाश्रमों में हमारी सेहत की देखभाल कोई भी नही रखता ऐसा जवाब देने वाले 43.8 प्रतिशत वृद्ध है, यह प्रमाण वृद्धाश्रमों में हमारी सेहत की देखभाल हमारा साथी करता है, ऐसा जवाब देने वाले 6.8 प्रतिशत, हमारी सेहत की देखभाल वृद्धाश्रम के कर्मचारी रखते है ऐसा जवाब देने वाले 22.7 प्रतिशत वृद्ध है, हमारी सेहत की देखभाल वृद्धाश्रम में के दोस्त रखते है ऐसा जवाब देने वाले 22.5 प्रतिशत, हमारी सेहत की देखभाल हमारी लडकी, बहन और भाई करता है ऐसा जवाब देणे वाले प्रत्येकी 0.2 प्रतिशत वृद्धों कें प्रमाण से अधिक है।

सारणी संख्या 15 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि, हम रहते है इस वृद्धाश्रम में कोई भी आयु संबंधी बीमारियों से संबंधित सुविधा उपलब्ध नहीं है ऐसा जवाब देने वाले 50.0 प्रतिशत वृद्ध है, यह प्रमाण हम रहते है इस वृद्धाश्रम में अस्पताल 16.7 प्रतिशत, ॲब्युलन्स 18.8 प्रति" ात, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र 0.7 प्रतिशत, अस्पताल+ॲब्युलन्स 12 प्रतिशत और अस्पताल+ ॲब्युलन्स+जिम 1.8 प्रतिशत यह आयु संबंधी बीमारियों से संबंधित सुविधाऐं उपलब्ध है। ऐसा उत्तर देणे वाले उत्तरदाताओं के प्रमाण से अधिक है। इससे हम ऐसा कह सकते है की, वृद्धाश्रमों मे वृद्धों के लिए आयु संबंधी बीमारियों से संबंधित ससुविधाओं की कमी दिखाई देती है। सारणी संख्या 16 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि, हम रहते है इस वृद्धाश्रम के कर्मचारी प्रशिक्षित नही है ऐसा उत्तर देणे वाले 56.2 प्रतिशत वृद्ध है, यह प्रमाण वृद्धाश्रम के कर्मचारी प्रशिक्षित है ऐसा उत्तर देणे वाले 43.8 प्रतिशत उत्तरदाताओं के प्रमाण से अधिक है। इससे हम ऐसा कह सकते है की, वृद्धाश्रमों मे प्रशिक्षित कर्मचारी नही होने के कारण बुजुर्गों की उपेक्षा होती है, इस लिए वृद्धाश्रमों मे प्रशिक्षित कर्मचारीयों का होना आवश्यक है।

निष्कर्ष –

1. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों में 70 से 79 वर्ष इस मध्यम वृद्ध (Middle Old Age) आयु समूह के उत्तरदाते सबसे ज्यादा अर्थात् 38.8 प्रतिशत हैं।
2. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों में महिला वृद्ध उत्तरदाताओं का प्रमाण सबसे ज्यादा अर्थात् 53. 3 प्रतिशत इतना हैं।
3. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों में प्राथमिक शिक्षा प्राप्त वृद्धों का प्रमाण सबसे ज्यादा हैं।
4. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों में 'विवाहित वृद्ध' 81.3 प्रतिशत है, इन में विधवाओं का प्रमाण (36.2 प्रतिशत) सबसे ज्यादा हैं।
5. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों में हिंदु धर्मियों और खुले वर्ग के उत्तरदाताओं की संख्या अधिक है।
6. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों में वर्तमान स्थिति में हमारे स्वास्थ्य की स्थिती बुरी है ऐसा उत्तर देणे वाले अधिक 59.0 प्रतिशत वृद्ध है।
7. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रमो मे रहने वाले वृद्धों में से केवळ 6.0 प्रतिशत वृद्धों को डिमेन्शिया और अल्झायमर जैसी मानसिक बिमारीयां है।
8. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों में हमारी स्मरणशक्ती/यादा" त 'अच्छी है' ऐसा उत्तर देने वाले वृद्धों का प्रमाण अधिक है।
9. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों मे सर्वाधिक 70.5 प्रतिशत उत्तरदाता है जिनका गिर कर कोई फ्रैक्चर नहीं हुआ है, और जिन 29.5 प्रतिशत लोगो का फ्रैक्चर हुआ है, इसमे 13.7 प्रतिशत लोगो ने हमारे पैर मे फ्रैक्चर हुआ है ऐसा जवाब दिया है, और यह प्रमाण शरीर के अन्य भागो मे फ्रैक्चर हुआ है ऐसा जवाब देणे वाले उत्तरदाताओं से सर्वाधिक है।
10. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों में स्वास्थ्य संबंधी समस्याऐं वाले वृद्धों की संख्या 93.2 प्रतिशत है, इन में 'हमारे शरीर की रोग प्रतिरोधक भाक्ती का ऱ्हास हुआ है ऐसा उत्तर देने वाले वृद्धों का प्रमाण अधिक (52.5 प्रतिशत) है।
11. महाराश्ट्र में वृद्धाश्रमों में रहने वाले वृद्धों में से सर्वाधिक 60.9 प्रतिशत वृद्धों को आखों से संबंधित बीमारी हुई है।
12. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रमों में रहने वाले वृद्धों में से सर्वाधिक 40.4 प्रतिशत वृद्धों को रक्तचाप यह बीमारी है।
13. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों में हमारी सेहत की देखभाल कोई भी नही रखता ऐसा उत्तर देने वाले वृद्धों का प्रमाण (43.8 प्रतिशत) अधिक है।
14. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों में से हम रहते है इस वृद्धाश्रम में कोई भी आयु संबंधी बीमारीयों सें संबंधित सुविधा उपलब्ध नहीं है ऐसा जवाब देने वाले वृद्धों का प्रमाण (50.0 प्रतिशत) अधिक है।
15. महाराष्ट्र में वृद्धाश्रम में रहने वाले वृद्धों में से हम रहते है इस वृद्धाश्रम के कर्मचारी प्रशिक्षित नही है ऐसा जवाब देने वाले वृद्धों का प्रमाण (56.2 प्रतिशत) अधिक है।

इस तरह, प्रस्तुत शोध पत्र से वृद्धाश्रमों में रहने वाले वृद्धो की आयु संबंधी बीमारीयों की स्थिति का पता लगाने का प्रयास किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची –

1. *गोखले भारच्चंद्र, (2012), वार्धक्य, जराविज्ञान और जीवन शैली, पुणे, उत्कर्ष प्रकाशन, पृ. सं. 45.*
2. *खडसे भा. कि., (2004), भारतीय समाज और सामाजिक समस्याऐं, मुंबई, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, पृ. सं. 146.*
3. *लिमकर सुधाकर, (2004), स्वास्थ्य संवाद, औरंगाबाद, संवाद प्रकाशन, पृ. सं. 61.*
4. *महाराष्ट्र टाइम्स, औरंगाबाद, सोमवार, दिनांक, 13 जुलाई 2015, पृ. सं. 5.*
5. *लिमकर सुधाकर, (2004), स्वास्थ्य संवाद, औरंगाबाद, संवाद प्रकाशन, पृ. सं. 61.*
6. *गोखले भारच्चंद्र, (2012), संतोषजनक वार्धक्य, पुणे, उत्कर्ष प्रकाशन, पृ. सं. 5.*
7. *गोखले भारच्चंद्र, (2012), वार्धक्य, जराविज्ञान और जीवनशैली, पुणे, उत्कर्ष प्रकाशन, पृ. सं. 4–5.*

8. गंदेवार एस. एन., (2003), भारतीय समाजः विवादास्पद विषय और समस्याएं, लातूर, विद्याभारती प्रकाशन, पृ. सं. 133.
9. खडसे भा. कि., (2004), भारतीय समाज और सामाजिक समस्याऐं, मुंबई, हिमालया पब्लिशिंग हाउस, पृ. सं. 144.
10. https://feedback.vikaspedia.in/health/93594392694 dated on 05/02/2020
11. संगोलकर दत्ता, (2014), मानवाधिकार, पुणे, जिज्ञासा प्रकाशन, पृ. सं. 157.
12. Elderly in India 2016, Central Statistics office, Govt. of India.